P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-X*June-2015

वैश्विक परिदृश्य में वैष्णव उपनिषदों की प्रासंगिकता

अंजलि यादव
प्रवक्ता,
संस्कृत विभाग,
ज्वाला देवी विद्या मंदिर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कानपुर

सारांश

भारतीय दर्शन का जन्म प्रकृति की गोद में हुआ। वैदिक ऋषियों ने कण–कण में व्याप्त प्राकृतिक सौन्दर्य को देखा। प्रकृति की नाना शक्तियों के रूप से प्रभावित होकर उनकी 'देवरूप' में कल्पना की। प्राकृतिक रहस्यों के प्रति कौतुहल से, जिज्ञासा से ही प्रचीनतम दर्शन का जन्म हुआ।

यह मानसिक कौतुहल ही अनेक वेदमंत्रों की रचना का कारण बना, उपनिषदों तक आकर 'आत्मसाक्षात्कार' के लक्ष्य में बदल गया। उपनिषदों के ऋषि का लक्ष्य था–

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योमिर्गमय
मृत्यो मर्मितं गमय। (बृह. उप. 1.3.28)

अर्थात असत् से सत् की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर से चलो। 'जीवन के उस मार्ग की खोज' जो सत्, प्रकाश और अमरत्व दिलवा सके– उपनिषदों का मूल उद्देश्य है।

वैष्णव उपनिषदों में वैष्णव धर्म क मूलभूत सिद्धान्त निहित है।

मुख्य शब्द : वैष्णव उपनिषद।

परिचय

भारतीय दर्शन के बीज यद्यपि ऋग्वेदादि संहिताओं में उपलब्ध हो जाते हैं, किन्तु भारतीय दर्शन का स्वरूप पूर्ण रूप से उपनिषदों में ही प्राप्त होता है। ऋग्वेद में भी 'ब्रह्मन्' और 'आत्मन' शब्द का प्रयोग किया गया है, किन्तु इनका परमात्मा और आत्मा अर्थ में प्रयोग उपनिषदों में ही मिलता हैं उपनिषद् भारतीय संस्कृति के आधारस्तम्भ हैं। समस्त वेदों का जो परमसत्य है, वही उपनिषदों में समुज्जवल रूप में प्रकट होता है।

"उपनिषादयति सर्वानर्थकरसंसारं विनाशयति, संसारकारणभूताम्–
विद्यां च शिथिलयति, ब्रहम च गमयति इति उपनिषद्"[1]

जो समस्त अनर्थों को करने वाले संसार का नाश करती है, संसार की कारणभूत अविद्या को शिथिल करती है तथा ब्रहम की प्राप्ति कराती है, वह उपनिषद् है।

वैष्णव उपनिषदों में वैष्णव धर्म के मूलभूत सिद्धान्त निहित है। अतः वैष्णव धर्म पौराणिक धर्म नहीं, अपितु यह वेदमूलक हैं, ऐसे अवतारों की भी वेदमूलकता सिद्ध होती है। रामरहस्य में राम मन्त्र के पुरश्चरण का विधान है तथा राम–तापिनी में राम शब्द की आध्यात्मिक व्याख्या इस आधार पर की गयी है–

"रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि।
इति राम पदेनासौ पर ब्रहम भिधीयते।।"[2]

अर्थात योगीजन जिस अनन्त, नित्यानन्द और चित्स्वरूप परमात्मका में रमण करते हैं वही पर ब्रहम रामनाम से अभिहित होता है। कृष्ण, गोपालतापिनी वासुदेव आदि उपनिषदें कृष्णोंपासना का प्रतिपादन करती है। इन सभी में परमब्रहम स्वरूप कृष्ण की महिमा का वर्णन किया गया है। कृष्णोपनिषद् में कृष्ण की महिमा का वर्णन किया गया है। कृष्णोंपनिषद् में कृष्ण के आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि वह तो शाश्वत ब्रहम हैं।

कलिसन्तरण उपनिषद् में कलियुग के पापों के नाश हेतु इस षोडश नाम वाले मन्त्र का विधान किया गया है। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्णा हरे कृष्णा हरे हर। चैतन्य महाप्रभु ने भी इस संकीर्तन मन्त्र को निश्चित ही इस उपनिषद् से लिया होगा इस संकीर्तन का यह प्रभाव है कि मनुष्य कलियुग के पापों को नष्ट कर अन्त में मुक्ति को प्राप्त होता हैं उपनिषद् कहती है– "सद्यो मुच्यते–सद्यो मुच्यते भगवद्" भक्ति की जो धारा वैदिक संहिताओं से उद्भूत होती है, वह प्रवहमान होती हुई उपनिषदों तक आती है और वहां से आगे बढ़कर पौराणिक और लौकिक संस्कृत–साहित्य को आप्लावित करती है। वैष्णव उपनिषदों में सर्वाधिक भगवद्भक्त का निरूपण हुआ है, यदि उसका दर्शन

कठ, मुण्डक और श्वेताश्वर उपनिषदों में भी होता है। कुछ लोगों का कहना है कि उपनिषदों में विशुद्ध ज्ञान का प्रतिपादन हैं, लेकिन वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। विचार करने से यहाँ ज्ञान, कर्म और उपासना या भक्ति इन तीनों का प्रतिपादन देखा जाता है। गीता में इन तीनों का प्रतिपादन लोग स्वीकार करते है। गीता उपनिषदों का सार है। उपनिषद् गो–रूप में माने गये हैं और गीता दुग्ध रूप। अतः गीता में प्रतिपादित विषयों का उद्गम उपनिषदों में अवश्य होना चाहिए। इस आधार पर उपनिषदों में भी ज्ञान, कर्म और भक्ति का होना स्वाभाविक ही है। कठोपनिषद् के एक श्लोक मे ंपरमात्मा की कृपा अथवा अनुग्रह की झलक इस रूप में देखी जाती है–

"नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो
न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्य–
स्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्।।" 1.1.23

शंकराचार्य ने मोक्ष प्राप्ति के लिये ज्ञान को मुख्य साधन माना ह, जैसा की ऋते ज्ञानात्रमुक्तिः 'ज्ञानादकवतु कैवल्यम्' इत्यादि वचनों से स्पष्ट है परन्तु रामानुज ने इसकेलिए भक्ति को साधनरूप में अपनाया। उनके अनुसार वैदिक कर्मानुष्ठान भक्ति में सहायक होता है। अतः कर्म की सहायता से उपलब्ध भक्ति मोक्षप्राप्ति का साधन बनती है। भक्ति से पसन्न होकर भगवान जी के समस्त बन्धनों को छिन्न कर देते हैं। भक्ति से प्रेरित होकर जीव जब भगवान की शरण में जाता है, त बवह उसका निस्तार कर देते हैं। वह उसके ऊपर अनुग्रह कर मोक्ष प्रदान करते है।

वैष्णव उपनिषदों में वैष्णवाचार्यों के ही दार्शनिक सिद्धान्तों का दर्शन होता है। वैष्णव आचार्यों ने भगवान विष्णु, नारायण और उनके अवतारभूत राम, कृष्ण, नृसिंह आदि की उपसना पर बल दिया है। इन्ही देवों का वैष्णव उपनिषदों में अत्यधिक वर्णन प्राप्त होता है। कठोपनिषद् में जिस मोक्षमार्ग को छुरे की तीक्ष्ण धार के समान दुर्गम बताया गया है, वैष्णवाचार्यों ने भक्ति के द्वारा इसे सुगम सिद्ध कर दिया है।

सभी वैष्णव उपनिषदों में स्थान–स्थान पर मोक्ष के विषय में बताया गया है, क्योंकि यही मनुष्य का परम प्राप्य है। अब्योक्तोपनिषद् में ध्यान की महिमा वर्णित करते हुये यह कहा गया है कि जो इसका अनुष्ठान करता है वह सभी लोगों को जीतकर परब्रहम को प्राप्त करता है।

"स सर्वान् लोकान् जित्वा ब्रहम परं प्राप्नोति"–4/21

इसप्रकार आरण्यकों और उपनिषदों में, ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास दृष्टिगोचर होता है। स्थूल से सूक्ष्म की ओर उठने की जो प्रवृत्ति ब्राहमणों में शून्य थी, आरण्यकों में यह शनैः–शनैः प्रकट हुई और उपनिषदों में वही सूक्ष्मता के चरम विकास तक पहुँची हुई दिखलायी पड़ती है। हम यह कह सकते हैं कि वैष्णव उपनिषदों की उत्कृष्ट विचारधारा की तुलना न तो भारत की कोई अन्य विचारधारा कर सकती है और न ही संसार की कोई अन्य विचारधारा। उनके स्थायी महात्म्य और उनके विशेष आदर का कारण यही है कि उन्होंने मन को, परम सत्य की सच्ची खोज में सदा के लिए प्रवृत्तकर दिया है।

उपनिषदों के द्वारा ही हम ब्रहमज्ञान होता है, वही उसका सम्यक् निरूपण करती है, इसलिए वेद वाड़मय में उपनिषदों की महत्वपूर्ण स्थिति है। उपनिषद् के बिना वेद अपूर्ण हैं क्योंकि मनुष्यों के परम प्राप्य आत्मतत्व का स्वरूप उन्ही में निहित है। यद्यपि वैदिक साहित्य के अन्त में उनकी स्थित मानी जाती है लेकिन उपनिषद का वेद के शीर्षस्थानीय कहना चाहिए। सम्प्रति भवसागरसंतरण हेतु दिव्य नौका के रूप में उपनिषद् का अनुशीलन अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. वैष्णव उपनिषदों का समीक्षात्मक अध्ययन पेज नं0 17
2. वैष्णव उपनिषदों का समीक्षात्मक अध्ययन पेज नं0 145
3. वैष्णव उपनिषदों का समीक्षात्मक अध्ययन डा0 रूद्रकुमार त्रिवेदी
4. भारतीय संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय
5. भारतीय संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य कपिलदेव द्विवेदी